# हर्षवर्धन के काल में धर्म, शिक्षा एवं सांस्कृतिक विकास का अध्ययन

प्राप्तिः 17.05.2026
स्वीकृतः 16.06.2026

33

**डॉ श्वेता शर्मा**
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
मान्यवर कांशीराम राजकीय महाविद्यालय,
गाजियाबाद
ईमेलः *historymkgc@gmail.com*

***सारांश***

*सम्राट हर्षवर्धन का शासनकाल भारतीय इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं गौरवशाली युग माना जाता है, जिसमें धर्म, शिक्षा, साहित्य तथा संस्कृति के क्षेत्र में व्यापक विकास और समृद्धि देखने को मिलती है। गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत में राजनीतिक अस्थिरता और विघटन की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, किंतु हर्षवर्धन ने अपने प्रभावशाली नेतृत्व, प्रशासनिक क्षमता तथा उदार नीतियों के माध्यम से उत्तर भारत में पुनः राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया। वे केवल एक शक्तिशाली शासक ही नहीं थे, बल्कि धर्मप्रेमी, विद्वान, कला–संरक्षक तथा लोककल्याणकारी दृष्टिकोण रखने वाले सम्राट भी थे। हर्षवर्धन ने धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय की नीति अपनाते हुए बौद्ध, हिंदू तथा जैन धर्मों को समान संरक्षण प्रदान किया। यद्यपि वे प्रारंभ में शिवभक्त थे, बाद में वे महायान बौद्ध धर्म से प्रभावित हुए, फिर भी उन्होंने किसी एक धर्म को विशेष महत्व न देकर सभी धर्मों के प्रति उदार दृ ष्टिकोण बनाए रखा। उनके शासनकाल में धार्मिक सभाओं, दान समारोहों तथा सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से सामाजिक सद्भाव और धार्मिक एकता को बढ़ावा मिला। प्रयाग और कन्नौज में आयोजित विशाल धार्मिक सभाएँ उनकी धार्मिक नीति और उदारता का उत्कृष्ट उदाहरण थीं। हर्षवर्धन संस्कृत भाषा के विद्वान लेखक थे तथा उन्होंने "नागानंद", "रत्नावली" और "प्रियदर्शिका" जैसे प्रसिद्ध नाटकों की रचना की। उनके दरबार में बाणभट्ट जैसे महान साहित्यकार उपस्थित थे, जिन्होंने "हर्षचरित" और "कादंबरी" जैसी महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की। संगीत, नृत्य, चित्रकला तथा स्थापत्य कला को भी राजकीय संरक्षण प्राप्त था। मंदिरों, विहारों तथा सांस्कृतिक केंद्रों के निर्माण ने भारतीय कला और स्थापत्य को नई दिशा प्रदान की। प्रस्तुत शोध लेख में हर्षवर्धन के काल में धर्म, शिक्षा एवं सांस्कृतिक विकास का ऐतिहासिक, सामाजिक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।*

***मुख्य शब्द***

*हर्षवर्धन, धर्म, शिक्षा, संस्कृति, नालंदा विश्वविद्यालय, बौद्ध धर्म, सांस्कृतिक विकास*

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.033

## प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में सम्राट हर्षवर्धन (606–647 ई.) का शासनकाल राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत में राजनीतिक विघटन और अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। विभिन्न क्षेत्रों में छोटे–छोटे राज्यों का उदय हो चुका था, जिसके कारण राष्ट्रीय एकता कमजोर पड़ गई थी। ऐसे समय में हर्षवर्धन ने उत्तर भारत में पुनः राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया और अपने नेतृत्व, प्रशासनिक क्षमता तथा सैन्य शक्ति के बल पर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। वे पुण्यभूति वंश के महान शासक थे तथा उनकी राजधानी कन्नौज थी, जो उस समय राजनीतिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण नगर माना जाता था। हर्षवर्धन की शासन व्यवस्था उदार, संगठित और लोककल्याणकारी थी, जिसने भारतीय समाज को स्थिरता और समृद्धि प्रदान की।

हर्षवर्धन केवल एक कुशल शासक ही नहीं थे, बल्कि वे धर्मप्रेमी, विद्वान, उदार शासक और कला–संरक्षक भी थे। उनके शासनकाल में धर्म, शिक्षा तथा संस्कृति के क्षेत्र में व्यापक प्रगति हुई। उन्होंने बौद्ध धर्म को विशेष संरक्षण प्रदान किया, किंतु वे धार्मिक दृष्टि से अत्यंत सहिष्णु थे और हिंदू तथा जैन धर्मों के प्रति भी समान सम्मान की भावना रखते थे। उनके शासनकाल में धार्मिक सह–अस्तित्व और समन्वय की नीति को बढ़ावा मिला, जिससे समाज में शांति और सद्भाव की भावना विकसित हुई। हर्षवर्धन द्वारा प्रयाग तथा कन्नौज में विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया जाता था, जिनमें विभिन्न धर्मों के विद्वान और संत भाग लेते थे। इन सभाओं का उद्देश्य धार्मिक चर्चा, ज्ञान–विनिमय और सामाजिक एकता को प्रोत्साहित करना था।

हर्षवर्धन के समय नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बन गया था। यहाँ भारत ही नहीं, बल्कि चीन, तिब्बत, कोरिया और मध्य एशिया से भी विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे। नालंदा में धर्म, दर्शन, व्याकरण, चिकित्सा, गणित, ज्योतिष तथा साहित्य जैसे अनेक विषयों की उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी। विश्वविद्यालय में विशाल पुस्तकालय, छात्रावास और विद्वानों की व्यवस्था थी, जिससे यह उस समय का विश्वप्रसिद्ध शिक्षण संस्थान बन गया था। हर्षवर्धन ने नालंदा विश्वविद्यालय को आर्थिक सहायता और राजकीय संरक्षण प्रदान कर शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रस्तुत शोध लेख में हर्षवर्धन के काल में धर्म, शिक्षा तथा सांस्कृतिक विकास का विस्तृत एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से उस समय की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि हर्षवर्धन का योगदान भारतीय संस्कृति, शिक्षा और धार्मिक समन्वय की परंपरा को सुदृढ़ करने में कितना महत्वपूर्ण था। उनका शासनकाल भारतीय इतिहास में ज्ञान, संस्कृति, सहिष्णुता और सामाजिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

## हर्षवर्धन के काल में धार्मिक स्थिति

हर्षवर्धन भारतीय इतिहास के उन महान शासकों में से एक थे, जिन्होंने धार्मिक सहिष्णुता, उदारता तथा समन्वय की नीति को अपनाकर समाज में शांति और सद्भाव स्थापित करने का प्रयास किया। उनका शासनकाल धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि उस समय भारत

में हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म समान रूप से प्रचलित थे। हर्षवर्धन स्वयं प्रारंभिक जीवन में भगवान शिव के उपासक थे और हिंदू धर्म की परंपराओं का पालन करते थे। किंतु समय के साथ वे महायान बौद्ध धर्म से प्रभावित हुए। विशेष रूप से चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा बौद्ध विद्वानों के संपर्क में आने के बाद उनमें बौद्ध धर्म के प्रति गहरी आस्था विकसित हुई।

हालाँकि बौद्ध धर्म से प्रभावित होने के बावजूद हर्षवर्धन ने कभी भी धार्मिक कट्टरता को प्रोत्साहित नहीं किया। उन्होंने हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों के प्रति समान सम्मान और सहिष्णुता की नीति अपनाई। यही कारण है कि उनके शासनकाल में विभिन्न धर्मों के अनुयायी स्वतंत्र रूप से अपने धार्मिक कार्यों और पूजा–पद्धतियों का पालन करते थे। उन्होंने अनेक मंदिरों, विहारों और धार्मिक संस्थाओं को संरक्षण प्रदान किया तथा धर्म को समाज में नैतिकता और लोककल्याण का माध्यम माना।

हर्षवर्धन द्वारा प्रयाग और कन्नौज में विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया जाता था, जिनमें विभिन्न धर्मों के विद्वान, साधु, भिक्षु तथा धार्मिक नेता भाग लेते थे। इन सभाओं का मुख्य उद्देश्य धार्मिक समन्वय, ज्ञान–विनिमय तथा सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देना था। कन्नौज सभा विशेष रूप से प्रसिद्ध थी, जिसमें ह्वेनसांग को भी आमंत्रित किया गया था। इस सभा में बौद्ध धर्म के सिद्धांतों पर चर्चा हुई तथा विभिन्न धर्मों के बीच वैचारिक संवाद स्थापित किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि हर्षवर्धन धार्मिक विवादों के स्थान पर सहयोग और सह–अस्तित्व की भावना को महत्व देते थे।

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने यात्रा–वृत्तांत में उल्लेख किया है कि हर्षवर्धन प्रत्येक पाँच वर्ष बाद प्रयाग में "महामोक्ष परिषद" अथवा महादान का आयोजन करते थे। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से साधु–संत, विद्वान, भिक्षु तथा सामान्य लोग एकत्रित होते थे। हर्षवर्धन इस समारोह में अपनी संचित संपत्ति, धन, वस्त्र तथा आभूषण तक दान कर देते थे। यहाँ तक कि कई बार वे अपना राजकीय परिधान भी दान कर देते थे और साधारण वस्त्र धारण करते थे। यह परंपरा उनकी धार्मिक उदारता, दानशीलता तथा लोककल्याणकारी दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।

इस प्रकार हर्षवर्धन का शासनकाल धार्मिक सहिष्णुता, समन्वय और सांस्कृतिक उदारता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। उन्होंने विभिन्न धर्मों के मध्य सहयोग और सद्भाव स्थापित कर भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी परंपरा को सुदृढ़ किया। उनका धार्मिक दृष्टिकोण न केवल तत्कालीन समाज के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि आज के समय में भी धार्मिक सह–अस्तित्व और सामाजिक एकता के लिए प्रेरणास्रोत माना जाता है।

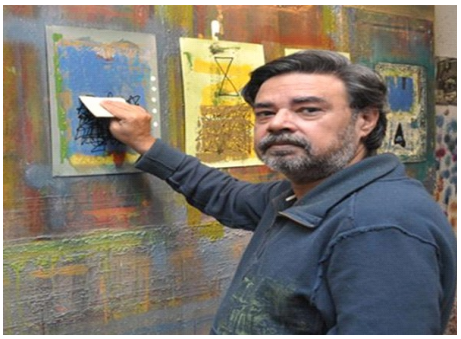

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.033

## शिक्षा व्यवस्था एवं नालंदा विश्वविद्यालय

हर्षवर्धन के शासनकाल में शिक्षा व्यवस्था अत्यंत विकसित और संगठित स्वरूप में विद्यमान थी। इस काल में शिक्षा को समाज और राज्य दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि नैतिकता, धर्म, संस्कृति तथा बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करना भी था। शिक्षा मुख्यतः गुरुकुलों, आश्रमों, मठों तथा विश्वविद्यालयों में प्रदान की जाती थी। गुरुकुल व्यवस्था में विद्यार्थी अपने गुरु के संरक्षण में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे तथा अनुशासन, सेवा और नैतिक मूल्यों का पालन करना उनकी शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग था।

हर्षकाल में संस्कृत शिक्षा का प्रमुख माध्यम थी तथा इसे विद्वानों और शिक्षित वर्ग की भाषा माना जाता था। शिक्षा में धर्म, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, चिकित्सा, राजनीति, साहित्य, तर्कशास्त्र तथा गणित जैसे विषयों का अध्ययन कराया जाता था। बौद्ध धर्म के प्रभाव के कारण बौद्ध दर्शन और साहित्य का भी व्यापक अध्ययन होता था। इस समय शिक्षा केवल धार्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि व्यावहारिक और बौद्धिक विषयों को भी समान महत्व दिया जाता था।

हर्षवर्धन के काल में नालंदा विश्वविद्यालय विश्व का सबसे प्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित शिक्षा केंद्र बन चुका था। यह विश्वविद्यालय केवल भारत ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण एशिया में ज्ञान और विद्या का प्रमुख केंद्र माना जाता था। नालंदा विश्वविद्यालय में लगभग 10,000 विद्यार्थी और 1,500 से अधिक आचार्य अध्ययन एवं अध्यापन कार्य में संलग्न थे। यहाँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों के अतिरिक्त चीन, तिब्बत, कोरिया, जापान, श्रीलंका तथा मध्य एशिया से भी विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते थे। इससे स्पष्ट होता है कि नालंदा विश्वविद्यालय की ख्याति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हो चुकी थी।

नालंदा विश्वविद्यालय में विशाल पुस्तकालय, छात्रावास, प्रार्थना सभागार, अध्ययन कक्ष तथा शोध केंद्र स्थापित थे। इसका पुस्तकालय "धर्मगंज" अत्यंत प्रसिद्ध था, जिसमें हजारों दुर्लभ ग्रंथ सुरक्षित थे। यहाँ बौद्ध धर्म के साथ–साथ वेद, उपनिषद, व्याकरण, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र और साहित्य संबंधी ग्रंथों का भी अध्ययन किया जाता था। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के रहने और भोजन की व्यवस्था निःशुल्क थी, जिससे दूर–दूर से आने वाले विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में सुविधा मिलती थी।

हर्षवर्धन ने नालंदा विश्वविद्यालय को विशेष राजकीय संरक्षण प्रदान किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के संचालन के लिए अनेक गाँवों की आय दान में दी तथा शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई। इससे शिक्षा के विकास को स्थिरता और प्रोत्साहन मिला। हर्षवर्धन की शिक्षा नीति उदार और ज्ञान–केंद्रित थी, जिसके कारण उनके शासनकाल में बौद्धिक और सांस्कृतिक चेतना का व्यापक विकास हुआ।

इस प्रकार हर्षकालीन शिक्षा व्यवस्था केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं थी, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और बौद्धिक परंपराओं के संरक्षण और विकास का प्रमुख आधार भी थी। नालंदा विश्वविद्यालय उस युग की शैक्षिक उत्कृष्टता, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंधों और ज्ञान–विज्ञान की उन्नति का महान प्रतीक था।

## साहित्य एवं सांस्कृतिक विकास

हर्षवर्धन का शासनकाल भारतीय साहित्य, कला और संस्कृति के विकास की दृष्टि से

अत्यंत समृद्ध एवं गौरवपूर्ण माना जाता है। इस काल में संस्कृत भाषा और साहित्य को विशेष संरक्षण प्राप्त हुआ तथा विद्वानों, कवियों और कलाकारों को राजकीय आश्रय प्रदान किया गया। हर्षवर्धन स्वयं एक विद्वान, साहित्यप्रेमी तथा कला–संरक्षक शासक थे। उन्होंने न केवल विद्वानों को प्रोत्साहित किया, बल्कि स्वयं भी संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों की रचना की। उनके द्वारा रचित "नागानंद", "रत्नावली" और "प्रियदर्शिका" संस्कृत नाटक साहित्य की अमूल्य धरोहर मानी जाती हैं। "नागानंद" में बौद्ध करुणा और मानवीय मूल्यों का सुंदर चित्रण मिलता है, जबकि "रत्नावली" और "प्रियदर्शिका" में प्रेम, सामाजिक जीवन तथा राजदरबारी संस्कृति का आकर्षक वर्णन किया गया है। इन नाटकों से यह स्पष्ट होता है कि हर्षवर्धन केवल एक शासक ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि के साहित्यकार और सांस्कृतिक चिंतक भी थे।

हर्षकाल में अनेक महान विद्वानों और साहित्यकारों का उदय हुआ, जिनमें बाणभट्ट का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बाणभट्ट हर्षवर्धन के राजकवि थे और उन्होंने "हर्षचरित" तथा "कादंबरी" जैसे प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की। "हर्षचरित" संस्कृत गद्य साहित्य की एक उत्कृष्ट कृति मानी जाती है, जिसमें हर्षवर्धन के जीवन, शासन, प्रशासन तथा समकालीन समाज का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ केवल एक जीवनी नहीं, बल्कि उस समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत भी है। दूसरी ओर "कादंबरी" संस्कृत साहित्य का एक अत्यंत लोकप्रिय और कलात्मक उपन्यास है, जिसमें प्रेम, भावनाओं और मानवीय संवेदनाओं का अत्यंत सुंदर चित्रण किया गया है। बाणभट्ट की भाषा शैली अत्यंत अलंकारपूर्ण, प्रभावशाली और साहित्यिक सौंदर्य से परिपूर्ण थी, जिसने संस्कृत साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

चित्रकला और मूर्तिकला के क्षेत्र में भी हर्षकाल महत्वपूर्ण रहा। मंदिरों, विहारों और धार्मिक स्थलों को कलात्मक रूप से सजाया जाता था। धार्मिक विषयों के साथ–साथ प्रकृति, सामाजिक जीवन और मानवीय भावनाओं का भी चित्रण किया जाने लगा। इससे भारतीय कला में सौंदर्य, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विविधता का समन्वय दिखाई देता है।

हर्षवर्धन के शासनकाल में संस्कृति केवल राजदरबार तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसका प्रभाव समाज के सामान्य जीवन पर भी दिखाई देता था। लोकगीत, लोकनृत्य, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक उत्सव जनजीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। इससे भारतीय संस्कृति की उदारता, समन्वय और जीवंतता का विकास हुआ।

इस प्रकार हर्षकाल भारतीय साहित्य और संस्कृति के उत्कर्ष का एक स्वर्णिम युग था। इस काल में साहित्य, कला, संगीत और सांस्कृतिक गतिविधियों को जो संरक्षण प्राप्त हुआ, उसने भारतीय सभ्यता को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हर्षवर्धन और उनके समकालीन विद्वानों का योगदान भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक माना जाता है।

**कला एवं स्थापत्य**

हर्षवर्धन के शासनकाल में कला और स्थापत्य का उल्लेखनीय विकास हुआ, जिसने भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को नई दिशा प्रदान की। हर्षकालीन कला में धार्मिक आस्था, आध्यात्मिक चेतना तथा सांस्कृतिक समन्वय का सुंदर रूप देखने को मिलता है। इस काल में मंदिरों,

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.033

बौद्ध विहारों, स्तूपों तथा मठों का व्यापक निर्माण कराया गया। ये केवल धार्मिक उपासना के केंद्र नहीं थे, बल्कि शिक्षा, दर्शन, संस्कृति तथा सामाजिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र भी थे। विशेष रूप से बौद्ध विहारों ने शिक्षा और धर्म प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नालंदा, विक्रमशिला तथा अन्य बौद्ध संस्थानों के विकास से यह स्पष्ट होता है कि हर्षवर्धन ने धार्मिक और शैक्षिक स्थापत्य को विशेष संरक्षण प्रदान किया।

हर्षकालीन स्थापत्य कला पर गुप्तकालीन कला शैली का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। भवनों के निर्माण में संतुलन, सादगी तथा आध्यात्मिकता का विशेष ध्यान रखा जाता था। मंदिरों और विहारों की संरचना में कलात्मक सौंदर्य के साथ–साथ धार्मिक महत्व को भी प्रमुखता दी जाती थी। इस काल की स्थापत्य कला में ऊँचे शिखर, अलंकृत द्वार, सुंदर स्तंभ तथा विस्तृत प्रांगणों का प्रयोग देखने को मिलता है। पत्थरों पर की गई नक्काशी और सजावट भारतीय शिल्पकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करती थी।

मूर्तिकला के क्षेत्र में भी इस काल में उल्लेखनीय प्रगति हुई। मूर्तियों में मुख्यतः बुद्ध, विष्णु, शिव तथा अन्य देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ बनाई जाती थीं। इन मूर्तियों में शांति, करुणा, आध्यात्मिकता तथा धार्मिक भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है। मूर्तिकारों ने प्रतिमाओं के निर्माण में सूक्ष्मता और सौंदर्य का विशेष ध्यान रखा। बुद्ध की ध्यानमग्न प्रतिमाएँ तथा हिंदू देवी–देवताओं की अलंकृत मूर्तियाँ उस समय की धार्मिक चेतना और कलात्मक कौशल को दर्शाती हैं।

चित्रकला भी हर्षकालीन संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग थी। धार्मिक कथाओं, बौद्ध जीवन प्रसंगों तथा सामाजिक जीवन को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता था। भित्ति चित्रों और पांडुलिपियों में बनाए गए चित्रों में रंगों का संतुलित प्रयोग तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। इस काल की चित्रकला में प्रकृति, धार्मिक प्रतीकों तथा मानव जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

हर्षवर्धन के समय कला केवल राजदरबारों तक सीमित नहीं थी, बल्कि समाज और धर्म के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी। धार्मिक उत्सवों, सांस्कृतिक समारोहों तथा सार्वजनिक आयोजनों के माध्यम से संगीत, नृत्य और नाटक जैसी कलाओं को भी संरक्षण प्राप्त हुआ। स्वयं हर्षवर्धन कला और साहित्य के संरक्षक थे तथा उन्होंने कलाकारों और विद्वानों को राजकीय संरक्षण प्रदान किया।

इस प्रकार हर्षकालीन कला एवं स्थापत्य भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकास के महत्वपूर्ण प्रतीक थे। इस युग की स्थापत्य और कलात्मक उपलब्धियाँ भारतीय सभ्यता की गौरवशाली परंपरा को दर्शाती हैं तथा यह सिद्ध करती हैं कि हर्षवर्धन का शासनकाल सांस्कृतिक समृद्धि और कलात्मक उत्कर्ष का स्वर्णिम युग था।

**सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव**

हर्षवर्धन के शासनकाल में भारतीय समाज में धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समन्वय तथा सामाजिक एकता की भावना का उल्लेखनीय विकास हुआ। हर्षवर्धन ने विभिन्न धर्मों के प्रति उदार नीति अपनाई, जिसके कारण बौद्ध, हिंदू तथा जैन धर्मों के अनुयायियों के बीच आपसी सहयोग और सद्भाव की भावना मजबूत हुई। उन्होंने किसी एक धर्म को राज्य का आधिकारिक धर्म घोषित करने के स्थान पर सभी धर्मों को समान सम्मान प्रदान किया। प्रयाग और कन्नौज में आयोजित धार्मिक

सभाओं में विभिन्न संप्रदायों के विद्वान, साधु और धार्मिक नेता भाग लेते थे, जिससे धार्मिक संवाद और विचारों के आदान–प्रदान को प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार हर्षकाल धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक बहुलता का महत्वपूर्ण उदाहरण बनकर उभरा।

हर्षवर्धन के काल में शिक्षा के व्यापक प्रसार ने समाज में बौद्धिक चेतना और ज्ञानपरंपरा को नई दिशा प्रदान की। नालंदा विश्वविद्यालय सहित अनेक शिक्षण संस्थानों को राजकीय संरक्षण प्राप्त था, जिसके कारण देश–विदेश से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने भारत आते थे। शिक्षा के माध्यम से दर्शन, साहित्य, चिकित्सा, ज्योतिष, व्याकरण तथा बौद्ध धर्म के अध्ययन का विकास हुआ। इससे समाज में ज्ञान, तर्क और बौद्धिक विमर्श की परंपरा मजबूत हुई। शिक्षित वर्ग के विकास ने भारतीय समाज को सांस्कृतिक रूप से अधिक समृद्ध और जागरूक बनाया।

साहित्य, संगीत, नाटक, चित्रकला तथा स्थापत्य कला को भी हर्षकाल में विशेष संरक्षण मिला। स्वयं हर्षवर्धन संस्कृत भाषा के विद्वान एवं साहित्यकार थे। उनके द्वारा रचित "नागानंद", "रत्नावली" और "प्रियदर्शिका" जैसी कृतियाँ उस समय की सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाती हैं। बाणभट्ट जैसे महान साहित्यकारों को राजकीय संरक्षण प्राप्त था, जिन्होंने "हर्षचरित" और "कादंबरी" जैसे प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की। इन साहित्यिक कृतियों ने भारतीय संस्कृति और साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

हर्षकाल में कला और संस्कृति केवल राजदरबारों तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उनका प्रभाव सामान्य जनजीवन पर भी दिखाई देता था। धार्मिक उत्सवों, मेलों और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से लोकसंस्कृति का विकास हुआ। संगीत और नृत्य को सामाजिक एवं धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना जाता था। मंदिरों, विहारों और शिक्षा केंद्रों के निर्माण ने स्थापत्य कला को भी समृद्ध किया।

हर्षवर्धन के शासनकाल का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव यह था कि इस युग ने भारतीय सभ्यता की उदारता, समन्वयवाद और ज्ञानपरंपरा को सुदृढ़ किया। विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच सामंजस्य स्थापित करके हर्षवर्धन ने भारतीय समाज में एकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया। उनका शासनकाल यह सिद्ध करता है कि धार्मिक सहिष्णुता, शिक्षा और सांस्कृतिक संरक्षण किसी भी समाज की प्रगति और स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इस प्रकार हर्षकाल भारतीय इतिहास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण चरण के रूप में स्मरण किया जाता है।

**निष्कर्ष**

हर्षवर्धन का शासनकाल भारतीय इतिहास में धर्म, शिक्षा एवं संस्कृति के उत्कर्ष का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण युग माना जाता है। गुप्त साम्राज्य के पतन के पश्चात भारत में राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न हो गई थी, किंतु हर्षवर्धन ने अपने कुशल नेतृत्व, उदार नीति और सांस्कृतिक दृष्टिकोण के माध्यम से समाज में पुनः स्थिरता और समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। वे केवल एक शक्तिशाली शासक ही नहीं, बल्कि धर्मप्रेमी, विद्वान और कला–संरक्षक भी थे। उनके शासनकाल में धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक विकास को विशेष महत्व दिया गया।

हर्षवर्धन के धार्मिक सहिष्णुता और समन्वय की नीति अपनाकर समाज में एकता और सद्भाव की भावना को प्रोत्साहित किया। यद्यपि वे बाद में महायान बौद्ध धर्म से प्रभावित हुए, फिर

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.033

भी उन्होंने हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों के प्रति समान सम्मान की नीति अपनाई। उनके द्वारा आयोजित कन्नौज सभा और प्रयाग महादान जैसी धार्मिक सभाएँ धार्मिक समन्वय और सामाजिक सहयोग के उत्कृष्ट उदाहरण थीं। इन आयोजनों के माध्यम से उन्होंने यह संदेश दिया कि विभिन्न धर्मों और विचाराधाराओं के बीच पारस्परिक सम्मान और सहयोग समाज की उन्नति के लिए आवश्यक है। उनकी नीति भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी परंपरा को सुदृढ़ करने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

शिक्षा के क्षेत्र में भी हर्षवर्धन का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय था। उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय सहित अनेक शिक्षण संस्थानों को संरक्षण और आर्थिक सहायता प्रदान की। नालंदा उस समय विश्व का एक प्रमुख शिक्षा केंद्र बन चुका था, जहाँ भारत के अतिरिक्त चीन, तिब्बत, कोरिया और अन्य देशों से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। हर्षवर्धन के संरक्षण के कारण शिक्षा और बौद्धिक विकास को नई दिशा मिली। उनके शासनकाल में शिक्षा केवल धार्मिक विषयों तक सीमित नहीं थी, बल्कि दर्शन, व्याकरण, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, साहित्य तथा अन्य ज्ञान–विज्ञान विषयों का भी व्यापक अध्ययन किया जाता था। इससे यह स्पष्ट होता है कि हर्षकालीन शिक्षा व्यवस्था ज्ञान के सर्वांगीण विकास पर आधारित थी।

साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में हर्षकाल अत्यंत समृद्ध और उन्नत था। स्वयं हर्षवर्धन संस्कृत भाषा के विद्वान साहित्यकार थे। उनके द्वारा रचित "रत्नावली", "प्रियदर्शिका" और "नागानंद" जैसे नाटक संस्कृत साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ मानी जाती हैं। इसके अतिरिक्त बाणभट्ट जैसे महान साहित्यकारों ने "हर्षचरित" और "कादंबरी" जैसे ग्रंथों की रचना करके भारतीय साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। राजदरबारों में संगीत, नृत्य, चित्रकला और नाट्यकला को संरक्षण प्राप्त था, जिससे सांस्कृतिक गतिविधियों का व्यापक विकास हुआ।

हर्षवर्धन के शासनकाल में कला और स्थापत्य का भी उल्लेखनीय विकास हुआ। मंदिरों, स्तूपों और विहारों का निर्माण कराया गया तथा धार्मिक संस्थानों को संरक्षण प्रदान किया गया। कला में आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक समन्वय की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। इस काल की सांस्कृतिक उन्नति ने भारतीय सभ्यता की गौरवशाली परंपराओं को और अधिक सुदृढ़ किया।

समग्र रूप से देखा जाए तो हर्षवर्धन का शासनकाल भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक पुनर्जागरण, धार्मिक समन्वय और शैक्षिक प्रगति का स्वर्णिम अध्याय था। उन्होंने अपने शासन के माध्यम से यह सिद्ध किया कि किसी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति केवल राजनीतिक प्रभुत्व में नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक, शैक्षिक और नैतिक उन्नति में निहित होती है। उनका योगदान भारतीय संस्कृति और सभ्यता की अमूल्य धरोहर के रूप में आज भी स्मरणीय है तथा भारतीय इतिहास में उनका नाम एक महान शासक, विद्वान और संस्कृति–प्रेमी सम्राट के रूप में सदैव आदरपूर्वक लिया जाता रहेगा।

**संदर्भ**

1. सतीश चन्द्र, मध्यकालीन भारत, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 2022।
2. आर. सी. मजूमदार, हिस्ट्री एंड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपल, भारतीय विद्या भवन, 2021।
3. रोमिला थापर, प्राचीन भारत का इतिहास, 2023।
4. ए. एल. बाशम, द वंडर दैट वाज इंडिया, 2020।

5. बाणभट्ट, हर्षचरित, संस्कृत ग्रंथावली संस्करण।
6. ह्वेनसांग, सी–यू–की (भारत यात्रा वृत्तांत)।
7. एन.सी.ई.आर.टी., प्राचीन भारतीय इतिहास, 2022।
8. भारतकोश, "हर्षवर्धन"।
9. विकिपीडिया हिंदी, "हर्षवर्धन"।
10. ब्रिटानिका विश्वकोश, "*Harshavardhana*", 2025।
11. राधाकुमुद मुखर्जी, 'हर्षवर्धन', 1926।
12. आर. सी. दत्त, 'प्राचीन भारत का इतिहास', 1906।
13. जवाहरलाल नेहरू, 'भारत एक खोज', 1946।
14. ए. एल. बाशम, 'द वंडर दैट वाज इंडिया', 1954।
15. काशी प्रसाद जायसवाल, 'हिंदू पॉलिटी', 1924।